भारत मे मिलीजुली (गठबंधन) सरकारो की राजनीति

[POLITIFCS OF COALITION GOVERNMENTS IN INDIA]

Name: Sheela Devi (Karnal)
Political Science

इस संसदीय व्यवस्था मे सर्वप्रथम केन्द्रीय स्तर और राज्य स्तर व्यवस्थापिका के लोकप्रिय सदन (लोकसभा/विधानसभा) के होते है। इन चुनावो मे जब किसी एक राजनीति दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हो जाता है ओर राजनीति दल दल एक नेता चुन लेता है, तब राज्य का प्रधान (राष्टपति/राज्यपाल) बहुमत दल के नेता को प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्री पद पर करता है। तथा मंत्रिमण्डल के गठन के साथ ही एकदलीय सरकार का गठन हो जाता है, लेकिन लोकपिगय सदन के किसी एक राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नही होता, त्रिशंकु लोकसभा या त्रिशंकु विधानसभा की सिथति बनती राजनीतिक अलो और दलय नेताओ के बीच गठबंधन को जन्म देने की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। और जो गठबंधन राज्य को अपने बहुमत से आश्वस्त कर देता है। उस गठबंधन के नेता को सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। गठबंधन का नेता प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री मिलीजुली सरकार का गठन करता है।

फरवरी 1967 के विधानसभा के चुनावो के बाद डी.पी. मिश्रा के नंतृत्व मे काग्रेस दल की सयरकार बनी लेकिन मिश्रा सरकार के पदग्रहण के साथ ही ग्वालियर की रातमाता के नेतृत्व मे गैर-काग्रेसी दलो के और काग्रेस के असन्तुष्ट गुट के सदस्यो के सहयोग से एक वैकल्पिक सरकार गठित करने की राजनीतिक कार्यवाही शुरू हो गई। 29 जुलाईए 1967 को मिश्रा सरकार पतन हो गया और ग्वालियर की राजमाता के परामर्श पर राज्यपाल ने गोविन्द नारायण सिंह को मध्य प्रदेश मे पहली संविद सरकार गठित करने का निमंत्रण दिया।

जून 1977 मे मध्य प्रदेश विधानसभा के चुनावो मे जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ और वीरेन्द्र कुमार सकलेचा के नेतृत्व मे सरकार का गठन हुआ। इस सरकार मे प्रमुख रूप से जनसंघ और संसोपा की भागीदारी थी। संसोपा नें सकलेचा के सतत विरोध की स्थिति अपना ली और दोनो घटको मे मतभेद और तनाव बहुत बढ गये। पहले तो सरकार मे नेतृत्व परिवर्तन हुआ। सकलेचा के स्थान पर कैलाश जोशी मुख्यमंत्री बनेए लेकिन अन्ततः जनवरी 1980 के लोकसभा के चुनावो के बाद जनता पार्टी सरकार को ही जाना पडा। फरवरी 1980 तक जनता पार्टी सरकार केवल इसलिए ख्वल पायी कि जनता पार्टी विधायक द लमे जनसंघ घटक की स्थिति बहुत सुदृढ़ थी।

फरवरी 1967 के विधानसभा चुनावो के बाद केरल मे पुनः नम्बूद्रीपाद के नेतृत्व मे वापपंथी अलो तथा मुस्लिम लीग की संयुक्त सरकार बनी, लेकिन इस मोर्चा सरकार मे शीघ्र ही दरारे पडने लगी। सरकार चुनाव मे किये गये वायदो को पूरा न कर पाई, खाद्य समस्या विकट हो गई और प्रशासन मे शिथिलता आ गई। सरकार के घटको मे पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण मतभेद बढने लगे और 1969 मे नम्बूद्रीपाद ने त्यागपत्र दे दिया। अच्युत मेनन के नेतृत्व मे साम्यवादी दल का नया मंत्रिमण्डल बन, जो केवल 9 महीने मे चला गया। सितम्बर 1970 मे पुनः विधानसभा के चुनाव हुए। तीन गठबंधनो मे सो कोई भी गठबंधन बहुमत प्राप्त नही कर सका। विधानसथा चुनावो मे सत्ताधारी मोर्च (कागेंसएसी.पी.आई. और अन्य दल) ने तीन चौथाई से अधिक स्थान प्राप्त कियेए लेकिन 1977-80 के काल मे सत्ताधारी मोर्चे के नेतृत्व मे जल्दी-जल्दी परिवर्तन होता रहा। के.करूणाकरण, ए.कें.एण्टोनी, पी.के. वासुदेवन नययर और मुस्लिम लीग के सी.एच. मोहम्मद कोया इस काल मे मुख्यमंत्री बने। 1979 तक आते-आते केरल मे दो मोर्चे बन गये। ये दो मोर्चे थे : प्रथम कांग्रेस के नेतृत्व मे लोकतात्रिंक मोर्चा और द्वितीय, मार्क्सवादी दल के नेतृत्व मे वामपंथी मोर्चा। केरल के उस समय से लेकर अब तक लगभग बारी-बारी से लोकतांत्रिक मोर्चो की सरकारे बनती रही है। केरल मे इन मिलीजुली सरकारो ने केरल को शासन और राजनीतिक स्थायित्व देने मे सफलता प्राप्त की।

फरवरी 1967 के विधानसभा चुनाव स्वतन्त्र दल और जन कांग्रेस ने संयुक्त रूप से लडकर 140 मे से 75 स्थान प्राप्त किये थे। चुनाव के बाद सवतन्त्र दल के नेता आर.एन.सिंह देव ने मार्च 1967 मे जन कांग्रेस के समर्थन से मिलीजुली सरकार बनाई। यह सरकार 1971 तक भलीभाँति कार्य करती रही। कांगेस द्वारा जन कांग्रेस को स्वतन्त्र दल से अलग करने के संभव प्रयत्न किये गयेए अतः मुख्यमंत्री ने 9 जनवरी 1971 को अपना त्यागपत्र दे दिया। मार्च 1971 मे विधानसभा के चुनाव हुए, परंतु किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नही हुआ। 1971 से लेकर 1975 तक उडीसा मे राजनीतिक अस्थायित्वप की स्थिति बनी रही। इस प्रकार उडीसा की मिलीजुली सरकारो मे केवल आर.एन.सिंह देव के नेतृत्व मे दो दलो की मिलीजुली सरकार ही चार वर्ष तक सफलतापुर्वक कार्य कर पाई।

1967 मे कांग्रेसी दल को पहली बार विधानसभा चुनावो मे पराजय का मुँह देखना पडा, लेकिन कोई एक राजनीतिक दल या मोर्चा स्पष्ट बहुमत प्राप्त नही कर पाया था। ऐसी स्थिति मे कांग्रेस विरोधी दलो ने तत्काल ही 'संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे' के रूप मे एक काम चलाऊ गठबंधन तैयार कर लिया। बंगला कांग्रेस के अजय मुखर्जी इस मोर्चे के नेता बने और इस मोर्चे मे प्रमुख 1977 के विधानसभा के चुनावो मे जनता पार्टी को भरी बहुमत मिला और घटक के कर्पूरी ठाकुर मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुए। जब केन्द्रीय स्तर पर और उत्तर प्रदेश मे लोकदल और जनसंघ भारी मतभेदो की स्थिति खडी हुई, तब बिहार मे जनसंघ घटक ने भारतीय लोकदल मंमिण्डल को हटाने मे अपनी पूरी लगा दी। राम सुन्दर दास नये मुख्यमंत्री बने और जब राष्टीय स्तर पर भारतीय जनता पार्टी का विभाजन हुआ तो जनसंघ घटक प्रधानता वाले इस मंत्रिमण्डल

को कांग्रेस (इ) के समर्थन से जीवित रखा गया। इस प्रकार बिहार मे भी जनता पार्टी से ये मिलीजुली सरकारे नितान्त अप्रभावी सिद्व हुई।

1977 मे पुनः जनता मोर्चा सरकार आस्तित्व मे आई। जनता मोर्चे मे पाँच दल शामिल थे : कांग्रेस,जनसंघ,सोशलिस्ट पार्टी,राष्टीय मजदूर पार्टी और भारतीय लोकदल। अब इसे 'जनता पार्टी सरकार' के नाम से जाना जाने लगा। संगठन कांग्रेस के बाबूभाई पटेल के नेतृत्व मे गठित इस सरकार भी जनता पार्टी मे केन्द्रीय स्तर पर उभर घटकवाद का प्रभाव पडा और संगठन कांग्रेस तथा जनसंघ के बीच प्रतिद्वंद्विता देखी गई।

विधानसभा मे माकर्क्सवादी दल का महत्वपूर्ण स्थिति प्राप्त है ओर प. बगांल की यह मिलीजुली सरकार 'एक दल की प्रधानता वाली मिलीजुली सरकार' है। 1982,87,91,और 96 के विधानसभा चुनावो मे जनता ने वामपंथी मोर्चे को भारी समर्थन पदान किया। ज्योति बसु को लगभग डेढ़ दशक से भारतीय राजनीतिक मे बहुत अधिक प्रभावशाली व्याक्त्वि की स्थिति प्राप्त रही है और पश्चिम बंगााल की मिलीजुली सरकार को राज्य स्तर पर मिलीजुली सरकार का सबसे अधिक सफल उदाहरण कहा जा सकता है। मई 2001 के प.बगाल विधानसभा चुनावो के बाद बुद्वदेव भट्टाचार्य के नेतृत्व मे मिलीजुली सरकार मई 2011 तक कार्य करती रही।

महाराष्ट मे 1995 से ही शिवसेना और भाजपा की मिलीजुली सरकार शिवसेना के नेतृत्व मे कार्य कर रही थी। शिवसेना और भाजपा का यह गठबंधन चुनाव पूर्ण गठबंधन के रूप मे है। सरकार मे भागीदार इस दल मे कुछ मतभेद थेए लेकिन मतभेदो के साथ एकता बनाए रखने वाले तत्व प्रबल रूप मे थे। महाराष्ट की 10वीं विधानसभा के लिए सम्पंत्र पुनावो (सितम्बर-अक्टूबर 1999) मे सत्तारूढ शिवसेना-भाजपा गठबंधन 288 मे से केवल 125 सीटे पर ही विजय प्राप्त कर सका। इसके विरीत कांग्रेस 175 सीटो के साथ विधानसभा मे सबसे बड़े दल के रूप मे उभरी। राज्य की त्रिशकुं विधानसभा मे किसी भी दल अथवा चुनाव पूर्व गठबंधन को स्पष्ट बहुमत न प्राप्त होने के कारण सरकार बनाने के लिए विभिन्न गठजोडो के प्रयास हुए।

हरियाणा मे हरियाणा विकास पार्टी और भाजपा की बंशीलाल के नेतृत्व मे तथा 24 जुलाई 199 मे ओम प्रकाश चौटाला के नेतृत्व मे भारतीय राष्टीय लोकदल भाजपा की मिलीजुली सरकार बनी। चौटाला के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार फरवरी 2005 मे सम्पन्न विधानसभा चुनावो मे पराजित हो गई। फरवरी 1977 मे सम्पन्न पजांब विधानसभा चुनावो मे अकाली भाजपा गठबंधन को शानदार सफलता मिली। प्रकाश सिंह बादल के नेतृत्व मे अकाली भाजपा गठबंधन सरकार ने अपना पाँच वर्ष का कार्यकाल पुरा किया। ये दोनो ही मिलीजुली सरकारे चुनाव पूर्व गठबंधन का परिणाम थी और वरिष्ट राजनीतिज्ञ इन सरकारो का नेतृत्व

कर रहे थे। चौटाला के नेतृत्व मे बनी पहली सरकार चुनावोत्तर गठबंधन सरकार थी। पजांब मे 2007 एंव 2012 के विधानसभा चंनावो के बाद प्रकाशसिंह बादल के नेतृत्व मेब नी सरकारे अकाली भाजपा गठबंधन सरकारे है।

मार्च 1977 मे उत्तर प्रदेश मे 'बसपा-भाजपा' जिस तिलीजुली सरकार का गठन हुआ वह भारतीय राजनीति मे अब तक गठित सभी मिलीजुली सरकारो से अलग हटकर है। इस मिलीजुली सरकार का गठन एक '6-6 माह के लिए बारी-बारी से मुख्यमंत्री पद के फॉर्मूले' के आधार पर हुआ। सरकार के गठन के समय ही यह निश्चित किया गया कि पहले 6 माह बसपा (मायावती) सरकार का नेतृत्व करेगी तथा उसके बाद 6 माह भाजपा (कल्याण सिंह) सरकार का नेतृत्व करेगे। इस प्रकार 1 वर्ष बीत जाने पर इस वात का निर्णय किया जायेगा कि उत्तर प्रदेश मे मिलीजुली सरकार के प्रयोग को आगे जारी रखा जा सकता है। अथवा नही। भाजपा-बसपा गठबंधन की अपनी विंसगतिया रही और 19 अकटमबर को कल्याण सिंह सरकार से मायावती ने समर्थन वापिस ले लिया। कल्याण सिंह ने जोड़-तोड़ की नीति को भौडे ढ़ंग से हुए कांग्रेस,बसपा और जनता दल से दल बदल कराकर अभूतपूर्व हिसां के बीच 23 अकटूबर 1997 को विधानासभा मे बहुमत साबित कर दिया। उत्तर प्रदेश की कल्याण सिंह तथा राम प्रकाश गुप्ता सरकारे भजपा लोकतांत्रिक कांग्रेस तान सरकारे जनता दल (राजाराम पाण्डेय) और बसपा से टूटे 12 विधायकों समेत समता पार्टी और निर्दलियो के समर्थन पर टिकी गई सरकार थी। 3 मई 2002 को बसपा नेता मायावती के नेतृत्व मे भाजपा-बसपा गठबंधन सरकार आस्तित्व मे आई और तिडकमो के बावजूद अगस्त 2003 मे मायावती सरकार गिर गई।

गोवा मे काग्रेस विधायक दल मे विघटन के पश्चात् अल्पमत मे रही लुईजिन्हो फलेरिया के नेतृत्व वाली सरकार ने 24 नवम्बर 1999 को त्यागपत्र दे दिया। फ्रासिस्को सरदिन्हा के नेतृत्व मे भारतीय जनता पार्टी के समर्थन दिन राज्य मे नई नई मिलीजुली सरकार का गठन हुआ। 2 जून मे हुए विधानसथा चुनावो मे कुंग्रेस रांकापा गठबंधन ने राज्य का 5 सीटो मे से 4 पर विजय प्राप्त कर ली जिसके बाद 401 विधानसभा मे कांग्रेस रांकापा की सीटो की सख्या 21 हो गई। इसके साथ ही 7 जुन 2005 को प्रताप सिंह राणे के नई गठबंधन सरकार गठित हुई।

2 जून 2007 को सम्पन्न गोंवा विधानसभा चुनावो मे किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नही हुआ। फलतः दिगंबर कामत के नेतृत्व मे कांग्रेस, राष्टवादी कांग्रेस पार्टी, महाराष्टवादी गोमांतक पार्टी की गठबंधन सरकार आस्तित्व मे आई।

सामान्यता यह सोचा जाता है। कि द्विदलीय व्यवस्था मे एकदलीय सरकार का गठन होगा और बहुदलीय व्यवस्था मे राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न होने के कारण मिलीजुली सरकार का गठन करना होगा। भारत लंबे समय तक इस अन्य नियम का अपवाद रहा है। और इस स्थिति का कारण था,

भारत की बहुदलीय व्यवस्था मे एक राजनीतिक दल को प्रधानता स्थिति प्राप्त होना। 1947 ई. से लकर 1966 तक स्थिति यह थी कि कांग्रेस को न केवल केन्द्र, वरन् अधिकांश राज्यो के स्तर के प्रधानता की स्थिति प्राप्त थी। 1971-76 के वर्षो मे और पुनः 1980-88 के काल मे केन्द्र तथा अधिकांश राज्यो मे उसने स्थिति प्राप्त कर ली है। इस प्रकार भारत के सवैधानिक इतिहास मे एक दल की सरकार एक सामान्य स्थिति के रूप मे और मिलीजुली सरकारे अपवाद स्वरूप रही है। लेकिन अब केन्दीय स्तर पर और अधिकांश राज्यो के स्तर पर मिलीजुली सरकारे बनना सामान्य स्थिति बन चुकी है। भारतीय राजनीति मे कांग्रेस को प्रधानता की स्थिति प्राप्त थी वह समाप्त हो गई है। और काई भी राजनीतिक दल कांग्रेस के पतन से उत्पत्र शून्य को नही भर पाया है। अतः राजनीतिक अनुमान यह है कि आगे आने वाली सरकारो मे भी भारत मे केन्द्रीय स्तर पर और भारतीय संघ के लगभग आधे राज्यो मे मिलीजुली सरकारे ही गठित होगी।

हरियााण की स्थापना नवंबर 1966 मे हुई थी। चतुर्थ आम चुनाव मे हरियाणा विधानसभा मे कांग्रेस ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर भगवत दयाल शर्मा के नेतृत्व मे सरकार बनाई गई लेकिन दल बदल के कारण लगभग एक माह बाद ही इस सरकार का पतन हो गया और राव वीरेन्द्र सिंह के नेतृत्व मे संयुक्त मोर्चे की सरकार बनी। संयुक्त मोर्चे की यह सरकार जैसे-तैसे लगभग 7 महीने (मार्च-अक्टूबर 1967) ही रह पाई। मई 1968 मे पुनः चुनाव हुए और इन चुनावो मे कांग्रेस ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर लिया। हरियाणा मे आया राम गया राम की स्थिति मो निरन्तर बनी रही। जनता पार्टी शासन काल (1977-79) को मिलीजुली सरकार का काल ही कहा जा सकता है क्योकि जनता पार्टी जनता पार्टी कभी भी घटकवाद से ऊपर उठकर एक सुदृढ़ राजनीतिक दल की स्थिति प्राप्त नही कर पाई। जून '77' मे हरियाणा विधानसभा के चुनावो मे जनता पार्टी ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर एक मिलीजुली सरकार का गठन किया, जिसमे भारतीय लोकदल और जनसंघ प्रमुख घटक थे। हरियाणा की इस सरकार पर केन्द्रीय नेतृत्व और उसके मतभेदो की छाया निरंतर पडती रही। जून 1987 मे विधानसथा चुनावो के बाद हरियाणा मे देपीलाल के नेतृत्व मे लोकदल एंव भाजपा की मिलीजुली सरकार गठित हुई, नंवबर 1989 मे जब देवीलाल केन्द्रीय मत्रिमण्डल मे शामिल हुए और ओमप्रकाश चौटाला हरियाणा के मुख्यमंत्री बन, तब हरियाणा मे राजनीतिक अस्थायित्व की स्थिति प्रांरभ हुई।

Name: Sheela Devi, Add. H.No. 1193, Sec-9, Karnal - 132001